भूमिका

आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के दौर में कुलीन बौद्धिक वर्गों द्वारा बनायी गई परंपरा और संस्कृति के अंतर्गत स्थापित सत्य, जिसके अंतर्गत इतनी सामाजिक असमानता है। इस असमानता के कारण अधिकांश जनता को बद से बदतर जीवन जीने के लिए विवश किया गया। उन अधिकांश पीड़ित जनता में सर्वाधिक स्त्रियाँ हैं जो सदियों से दमित, पीड़ित, शोषित और यातना के साये में रहती आ रही हैं। उन्हें अब 'गुलामगिरी' जैसी पुस्तकों से अपनी अस्मिता के बारे जानकर हैरानी होती है कि आखिर उन्हें इतनी यातना भरी जिंदगी जीने के लिए विवश क्यों किया गया? वर्तमान दौर अस्मिताओं का दौर है। जहाँ स्त्रियाँ यातना-प्रताड़ना से तंग आकर थोड़े अवसर मिलते ही वे अपनी अस्मिता की खोज में निकल जाती हैं और अपनी स्थिति पर चिंतन करती हैं। वे अपने आप से प्रश्न करती हैं और अपनी यथास्थिति से बहुत दुखी होती हैं फलस्वरूप समस्या की गहराई तक जाती हैं। स्त्रियाँ स्त्री-यातना जैसी समस्याओं के समाधान के लिए स्त्री चेतना के द्वारा संघर्ष करती हैं। संघर्ष में शामिल स्त्रियों में ज्यादातर शहरी स्त्री हैं और ग्रामीण बहुत कम हैं। लेकिन अब कुछ गिने- चुने मीडिया और सोशल मीडिया के द्वारा चेतना का प्रसार ग्रामीण इलाकों तक हो रहा है और स्त्री-संघर्ष में ग्रामीण स्त्रियों का योगदान भी बढ़ता जा रहा है। फिर भी स्त्री-संघर्ष में शामिल स्त्रियों की संख्या आबादी के हिसाब से कम है, उसके बावजूद वह समय दूर नहीं, जब सम्पूर्ण विश्व में स्त्रियों को संघर्ष के द्वारा समाज में सम्मान के साथ पूर्ण मानवोचित अधिकार भी प्राप्त होगा।

जबकि सूचना क्रांति के इस युग में स्त्रियों ने अवसर मिलते ही साबित कर दिया है कि समता के साथ अवसर मिले तो किसी भी मामले में स्त्रियाँ हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के बल पर हर मुकाम को हासिल कर सकती हैं। चेतना के माध्यम से स्त्रियाँ निरंतर इस ओर पूरी ऊर्जा और योजना के साथ सामाजिक अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्षरत जारी हैं। निकट भविष्य में स्त्री संघर्ष और तेज होने की उम्मीद है और आशातीत परिवर्तन भी होना तय है।

भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का देश हैविभिन्न संस्कृतियों की सुगंध से भारत की पहचान की जाती है।भारत में सबसे अधिक हिंदी भाषा बोली जाती हैसंजीव हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार के रूप में जाने जाते है इनका सर्कस उपन्यास हिंदी में प्रसिद्ध है भारतीय भाषा में मराठी भी भाषिक और साहित्यिक स्तरों पर समृद्ध

रही है। मराठी उपन्यासकारों में विश्वास पाटील महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनका मराठी में लिखित 'चंद्रमुखी' उपन्यास स्त्री संघर्ष के कई आयामों को दर्शाता है। जिसमें मैंने डॉ.रामजी तिवारी और रमेशचंद्र तिवारी द्वारा मराठी से हिंदी में अनूदित 'चंद्रमुखी' उपन्यास को अपने अध्ययन का आधार बनाया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रवंध 'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष' तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। दोनों कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में एक विशिष्ट आलोचकीय पद्धति है। इस पद्धति के द्वारा रचना के विविध आयामों पर व्यापक रूप से चर्चा की गई है एवं समय व परिवेश के अनुकूल निष्कर्ष निकाले गए हैं। रचनाएँ अपने समय, समाज और परिवेश के अंतर विरोध के संघर्षों से उत्पन्न होती हैं।

'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' के रचनात्मक मूल्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनकी कथावस्तु काफी मिलती-जुलती है, लेकिन इनका साहित्यिक स्वभाव अलग-अलग है। दोनों ही कृतियों में स्त्री संघर्ष है, स्त्री पीड़ा है, शोषण है, पितृसत्तात्मक समाज द्वारा स्त्री पर सदियों से किया गया अत्याचार है। परन्तु चेतना के प्रसार के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष समानता के लिए संघर्ष निरंतर जारी है। इन दोनों कृतियों में, स्त्री स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के लिए किया गया संघर्ष है जिसने मेरी रोचकता को और बढ़ा दिया। मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध के दौरान दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। यह अध्ययन मूलतः स्त्री-संघर्ष को केंद्र में रखकर किया गया है।

'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' ये दोनों ही उपन्यासों में स्त्री संघर्ष की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थितियों के संघर्षों को शामिल किया गया है।

'सर्कस' और 'चंद्रमुखी' उपन्यासों में स्त्री-जीवन-संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए कुछ प्रामाणिक तथ्यों के सहारे इस लघु शोध-प्रबंध का अध्यायीकरण चार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय 'संजीव व विश्वास पाटील का समय एवं रचना संसार' के अंतर्गत संजीव व विश्वास पाटील का समय एवं रचना संसार के बारे में गहराई से चर्चा की है। दोनों के रचना संसार के बारे में खोजपूर्ण और तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत भारतीय स्त्रियों का जीवन और उनका संघर्ष, स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर, ऐतिहासिकता और वर्तमान परिप्रेक्ष्य को सन्दर्भ में रखते हुए विवेचनात्मक विश्लेष्ण किया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत 'सर्कस' और 'चन्द्रमुखी' उपन्यासों में स्त्री–जीवन-संघर्ष को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, पारस्परिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक संघर्षों को आधार बना कर चर्चा की है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत दोनों उपन्यासों के भाषा और शिल्प पर,एक शोधार्थी के दृष्टिकोण से विवेचन किया है।

कुल मिलाकर, इस लघु शोध-प्रबंध के अंतर्गत झरना और चंद्रमुखी जैसी लाखों स्त्रियाँ जो सदियों से समाज के द्वारा मिल रही आत्मयातना, आत्मपीड़ा और 'बिना किये की' सजा को मूल प्रश्न के रूप में उद्घाटित किया गया है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ.रामानुज अस्थाना के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरे लघु शोध-प्रबंध को अपने नियमित निर्देशन और उचित मार्ग दर्शन से सहज एवं सरल बनाया। साथ ही विभागाध्यक्ष प्रो.कृष्ण कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने उक्त विषय पर मुझे लघु शोध कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

विश्वविद्यालय के उन सभी अध्यापकों का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने शोध-कार्य के दौरान महत्वपूर्ण निर्देश देकर मुझे सहयोग प्रदान किया।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ अपने अभिन्न मित्र अमित कुमार का जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया। अंत में, मैं उन सभी वरिष्ठ, कनिष्ठ एवं समकक्ष तथा ज्ञात-अज्ञात विद्वानों और विचारकों के प्रति अपना विनम्र अभिवादन करती हूँ, जिनकी पुस्तकों तथा आलेखों से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मुझे सहयोग मिला।

मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के दौरान कमियों को दूर करने का प्रयास किया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो इसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

मनदीप